The Scientist Hypothesis(J3)

by : ADEL ALI AL ORFI-LIBYA-1-9-2023

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمنِ الرَّحِيمِ

ब्रह्मांडीय समय की कमी

J2 + J में हमने बाइनरी ब्रह्मांड (UNV1) के बारे में बात की, -1
समय सहित सभी भौतिक नियम बंद हो गए हैं और एकमात्र
नियम जो काम करता है वह गुरुत्वाकर्षण है।

वैज्ञानिक ग्रहों, चंद्रमाओं और तारों के घूमने का सटीक माप -2
लेकर आए हैं। ब्रह्मांड के बारे में बात यह है कि यह वास्तव में
घूमता है... पहला धूल ब्रह्मांड वामावर्त घूमता है और जिस
ब्रह्मांड में हम रहते हैं वह दक्षिणावर्त परिक्रमा कर रहा है।

पृथ्वी के समय और ब्रह्मांड के सभी माप लगभग शून्य हैं। क्या -1
होगा अगर गणितज्ञ खगोलशास्त्रियों के साथ मिलकर एक (शून्य)
नहीं बल्कि दो (00) के आधार पर गणित विकसित करें...
गणितीय और खगोलीय वैज्ञानिक प्रगति में एक साथ बदलाव आ
सकता है।

अल्बर्ट आइंस्टीन की समय की सापेक्षता बिल्कुल सही है और -2
अंतरिक्ष में समय अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग होता है,
लेकिन यह अंतर यादृच्छिक नहीं है बल्कि इसका एक नियम है कि
शून्य (00) पर आधारित नए माप मानक की खोज होने पर हमें

पता चल जाएगा और देशांतर रेखांकन में उपयोग किया जाता है (जैसे कि हम पृथ्वी पर उपयोग करते हैं) लेकिन इसे आज तक खोजे गए ब्रह्मांड पर खींचा गया है। इन्हें "ब्रह्मांडीय समय सीमा" कहा जा सकता है।

अंततः हमारी आभासी ब्रह्मांडीय याम्योत्तर भी -3

हम तब तक आगे नहीं बढ़ेंगे जब तक हम डार्क मैटर के भीतर ब्रह्मांडीय समय की प्रकृति को नहीं जान लेते... न ही हम दूसरे ब्रह्मांड के किनारों पर शून्य (0) के समय तक पहुंच पाएंगे जिसमें हम रहते हैं क्योंकि यह फैला हुआ है और समय के साथ इसका विस्तार होता है .. और यह मेरी सबसे खतरनाक धारणा है कि ब्रह्मांड के किनारों पर समय का विस्तार होता है। और यह एक .और कहानी है

अपना समय देने के लिए धन्यवाद।

:अरबी में मूल पाठ की समीक्षा करने के लिए

https://archive.org/details/j-3-pdf_202309